श्रुतपंचमी पूजन

रचयिता - श्री राजमलजी पवैया

प्रस्तुति - तत्त्वचर्चा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

स्याद्वादमय द्वादशांगयुत माँ जिनवाणी कल्याणी
जो भी शरण हृदय से लेता हो जाता केवलज्ञानी ॥

जय जय जय हितकारी शिवसुखकारी माता जय जय जय
कृपा तुम्हारी से ही होता भेदज्ञान का सूर्य उदय ॥

श्री धरसेनाचार्य कृपा से मिला परम जिनश्रुत का ज्ञान
भूतबली मुनि पुष्पदन्त ने षट्खण्डागम रचा महान ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

अंकलेश्वर में ग्रंथराज यह पूर्ण हुआ था आज के दिन
जिनवाणी लिपिबद्ध हुई थी पावन परम आज के दिन ॥

ज्येष्ठशुक्ल पंचमी दिवस जिनश्रुत का जय-जयकार हुआ
श्रुतपंचमी पर्व पर श्री जिनवाणी का अवतार हुआ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं
ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं
ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि करणं

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

शुद्ध स्वानुभव जल धारा से यह जीवन पवित्र कर लूँ
साम्यभाव पीयूष पान कर जन्म-जरामय दुख हर लूँ ॥
श्रुतपंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वंदन कर लूँ
षट्खण्डागम धवल जयधवल महाधवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

शुद्ध स्वानुभव का उत्तम पावन चन्दन चर्चित कर लूँ
भव दावानल के ज्वालामय अघसंताप ताप हर लूँ ॥
श्रुतपंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वंदन कर लूँ
षट्खण्डागम धवल जयधवल महाधवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

शुद्ध स्वानुभव के परमोत्तम अक्षत शुद्ध हृदय धर लूँ
परम शुद्ध चिद्रूप शक्ति से अनुपम अक्षय पद वर लूँ ॥
श्रुतपंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वंदन कर लूँ
षट्खण्डागम धवल जयधवल महाधवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

शुद्ध स्वानुभव के पुष्पों से निज अन्तर सुरभित कर लूँ
महाशील गुण के प्रताप से मैं कंदर्प-दर्प हर लूँ ॥
श्रुतपंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वंदन कर लूँ
षट्खण्डागम धवल जयधवल महाधवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

शुद्ध स्वानुभव के अति उत्तम प्रभु नैवेद्य प्राप्त कर लूँ
अमल अतीन्द्रिय निजस्वभाव से दुखमय क्षुधाव्याधि हर लूँ ॥
श्रुतपंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वंदन कर लूँ
षट्खण्डागम धवल जयधवल महाधवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

शुद्धस्वानुभव के प्रकाशमय दीप प्रज्वलित मैं कर लूँ
मोहतिमिर अज्ञान नाश कर निज कैवल्य ज्योति वर लूँ ॥
श्रुतपंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वंदन कर लूँ
षट्खण्डागम धवल जयधवल महाधवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय अज्ञानांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

शुद्ध स्वानुभव गन्ध सुरभिमय ध्यान धूप उर में भर लूँ
संवर सहित निर्जरा द्वारा मैं वसु कर्म नष्ट कर लूँ ॥
श्रुतपंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वंदन कर लूँ
षट्खण्डागम धवल जयधवल महाधवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

शुद्ध स्वानुभव का फल पाऊँ मैं लोकाग्र शिखर वर लूँ
अजर अमर अविकल अविनाशी पदनिर्वाण प्राप्त कर लूँ ॥
श्रुतपंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वंदन कर लूँ
षट्खण्डागम धवल जयधवल महाधवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुत षट्खण्डागमाय महा मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

शुद्ध स्वानुभव दिव्य अर्घ्य ले रत्नत्रय सुपूर्ण कर लूँ
भव-समुद्र को पार करूँ प्रभु निज अनर्घ्य पद मैं वर लूँ ॥
श्रुत पंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वंदन कर लूँ
षट्खण्डागम धवल जयधवल महाधवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जयमाला

(ताटंक)

श्रुतपंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का
गूँजा जय-जयकार जगत में जिनश्रुत के अवतार का ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

ऋषभदेव की दिव्यध्वनि का लाभ पूर्ण मिलता रहा
महावीर तक जिनवाणी का विमल वृक्ष खिलता रहा ॥

हुए केवली अरु श्रुतकेवलि ज्ञान अमर फलता रहा
फिर आचार्यों के द्वारा यह ज्ञानदीप जलता रहा ॥

भव्यों में अनुराग जगाता मुक्तिवधू के प्यार का
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

गुरु-परम्परा से जिनवाणी निर्झर-सी झरती रही
मुमुक्षुओं को परम मोक्ष का पथ प्रशस्त करती रही ॥

किन्तु काल की घड़ी मनुज की स्मरणशक्ति हरती रही
श्री धरसेनाचार्य हृदय में करुण टीस भरती रही ॥

द्वादशांग का लोप हुआ तो क्या होगा संसार का
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

शिष्य भूतबलि पुष्पदन्त की हुई परीक्षा ज्ञान की
जिनवाणी लिपिबद्ध हेतु श्रुत-विद्या विमल प्रदान की ॥

ताड़ पत्र पर हुई अवतरित वाणी जनकल्याण की
षट्खण्डागम महाग्रन्थ करणानुयोग जय ज्ञान की ॥

ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिवस था सुर-नर मंगलाचार का
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

धन्य भूतबली पुष्पदन्त जय श्री धरसेनाचार्य की
लिपि परम्परा स्थापित करके नई क्रांति साकार की ॥

देवों ने पुष्पों की वर्षा नभ से अगणित बार की
धन्य-धन्य जिनवाणी माता निज-पर भेद विचार की ॥

ऋणी रहेगा विश्व तुम्हारे निश्चय का व्यवहार का
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

धवला टीका वीरसेन कृत बहत्तर हजार श्लोक
जय धवला जिनसेन वीरकृत उत्तम साठ हजार श्लोक ॥

महाधवल है देवसेन कृत है चालीस हजार श्लोक
विजयधवल अरु अतिशय धवल नहीं उपलब्ध एक श्लोक ॥

षट्खण्डागम टीकाएँ पढ़ मन होता भव पार का
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

फिर तो ग्रन्थ हजारों लिक्खे ऋषि-मुनियों ने ज्ञानप्रधान
चारों ही अनुयोग रचे जीवों पर करके करुणा दान ॥

पुण्य कथा प्रथमानुयोग द्रव्यानुयोग है तत्त्व प्रधान
एक्सरे करणानुयोग चरणानुयोग कैमरा महान ॥

यह परिणाम नापता है वह बाह्य चरित्र विचार का
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

जिनवाणी की भक्ति करें हम जिनश्रुत की महिमा गायें
सम्यग्दर्शन का वैभव ले भेद-ज्ञान निधि को पायें ॥

रत्नत्रय का अवलम्बन लें निज स्वरूप में रम जायें
मोक्षमार्ग पर चलें निरन्तर फिर न जगत में भरमायें ॥

धन्य-धन्य अवसर आया है अब निज के उद्धार का
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(ताटंक)

गूँजा जय-जय नाद जगत में जिनश्रुत जय-जयकार का
श्रुतपंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खण्डागमाय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(दोहा)

श्रुतपंचमी सुपर्व पर, करो तत्त्व का ज्ञान
आत्मतत्त्व का ध्यान कर, पाओ पद निर्वाण ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha